वानिकी समाचार

(अर्द्धवार्षिक)

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून

वर्ष – 5 जुलाई–दिसम्बर 2013 अंक – 2

वन जलविज्ञान पर एशिया प्रशान्त कार्यशाला

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में एशोसिएशन ऑफ फॉरेस्ट्री रिसर्च इंस्टीटयूशन्स (ए.पी.ए.एफ.आर.आई.) मलेशिया तथा कोरिया फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीटयूट (के.एफ.आर.आई.) कोरिया के सहयोग से जलविज्ञान पर एशिया प्रशान्त कार्यशाला, "वाटर एण्ड फॉरेस्ट–बियॉन्ड ट्रेडिशनल फॉरेस्ट हाइड्रोलॉजी" दिनांक 23 से 25 सितम्बर 2013 तक आयोजित की गई। वैश्विक स्तर के प्रख्यात राष्ट्रीय संस्थानों जैसे भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून (आई.सी.एफ.आर.ई.); भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रूड़की (आई.आई.टी.आर.); राष्ट्रीय जल विद्युत संस्थान, रूड़की (एन.आई.एच.); केन्द्रीय मृदा तथा जल संरक्षण अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण संस्थान (सी.एस.डब्ल्यू.सी.आर.टी.आई.), देहरादून; वाडिया हिमालयन भू–विज्ञान संस्थान, देहरादून (डब्ल्यू.आई. एच.जी.), देहरादून तथा भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान (आई.आई.आर. एस.), देहरादून को सम्मिलित कर कार्यशाला के तकनीकी पहलुओं को सुलझाने के लिए तकनीकी साझेदारों का समूह बनाया गया। कार्यशाला का उद्‌घाटन माननीय केन्द्रीय मंत्री, श्री हरीश रावत, जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार ने किया। उद्‌घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा कि मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए वन तथा जल दोनों ही आवश्यक है। विभिन्न देशों जैसे बांग्लादेश, चीन, कोरिया, मलेशिया, फिलीपीन्स, नेपाल, नीदरलैण्ड, वियतनाम, मैक्सिको तथा थाईलैण्ड सहित भारत के विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों ने वन जलविज्ञान तथा जलवायु परिवर्तन पर विचारों का आदान–प्रदान किया।

माननीय श्री हरीश रावत, जल संसाधन मंत्री, भारत सरकार (अब माननीय मुख्य मंत्री उत्तराखण्ड) कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए

वन जलविज्ञान पर एशिया प्रशान्त कार्यशाला के सहभागी

शासक मण्डल की 48वीं बैठक

भा.वा.अ.शि.प. शासक मण्डल की 48वीं बैठक 25 जुलाई 2013 को पर्यावरण भवन, नई दिल्ली में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता डॉ. वी. राजगोपालन, सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, तथा अध्यक्ष, शासक मण्डल, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा की गई। बैठक की कार्यसूची में परामर्शी नियमों सहित अन्य कई महत्वपूर्ण विषयों पर विचार–विमर्श किया गया।

डायरेक्ट–टू–कन्ज्यूमर योजना

व.व.अ.सं., जोरहाट ने निम्नलिखित प्रशिक्षण–सह–कार्यशालाएं आयोजित की:

- नीमुगुडी सिबसागर क्षेत्र के स्वयं सहायता समूह के लिए 5 सितम्बर 2013 तथा मेलांग बालीचापोरी, जोरहाट में महिला स्वयं सहायता समूह के लिए दिनांक 07 अक्टूबर 2013 को "अगरबत्ती बनाने" पर व्यावहारिक प्रशिक्षण–सह–कार्यशालाएं आयोजित की गई।
- सर्वशिक्षा मिशन, जोरहाट के सहयोग से दिनांक 14 सितम्बर 2013 को "जीवित लाख से जैविक बाड़ का निर्माण" पर प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- असम के डिबरूगढ़, तिनसुकिया, सिबसागर तथा जोरहाट जिलों में प्रशिक्षणार्थियों के लिए दिनांक 26 सितम्बर से 05 अक्टूबर 2013 तक उन्नत प्रौद्योगिकी, उपयुक्त डिजाइन तथा उपयोगिता वर्धन के साथ शिल्पकारों के क्षमता निर्माण, कौशल उन्नयन तथा परम्परागत बांस हस्तशिल्प को प्रोत्साहन देने के लिए अरूणाचल प्रदेश तथा असम में डॉन बॉस्को स्कूल के मिसिंग समुदाय के विद्यालय छोडने वाले विद्यार्थियों के लिए दिनांक 21 से 25 अक्टूबर 2013 तक प्रशिक्षण–सह–कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने दिनांक 16 से 20 दिसम्बर 2013 तक महिलाओं सहित ग्रामीणों के लिए "बांस हस्तशिल्प का प्रदर्शन तथा प्रशिक्षण" पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने लाल तथा मीठी इमली के 1500 ग्राफ्ट वितरित किये।

व.उ.सं., रांची द्वारा *फ्लेमेंजिया सैमियालता* पर लाख की खेती को प्रोत्साहन देने हेतु दिनांक 16 जुलाई 2013 को झारखण्ड के बारी, किटाहाटू, सायको जिवरी ग्रामों का दौरा किया गया। लाइफ एजुकेशन तथा डवलेपमेंट सपोर्ट (लीडस), एक गैर सरकारी संगठन के सदस्यों वाले दल ने पश्चिम सिंह भूम के

बंदगांव के किसानों के साथ किटाहाटू ग्राम का दौरा किया तथा *एफ. सैमियालता* के रोपणों के लिए सुझाव दिये तथा दिनांक 18 से 24 अगस्त 2013 तक किटाहाटू के किसानों को *एफ. सैमियालता* के पौधे भी वितरित किये गये। इसी कार्यक्रम के तहत झारखण्ड के खुंटी जिले के लुपंडी, रूडाडीह, टोपरा, सेको, किटाहाटू, लुपुगडूह ग्रामों का भी दौरा किया गया।

हि.व.अ.सं., शिमला ने दिनांक 12 नवम्बर 2013 को जिला कुल्लू (हि.प्र.) के जाना ग्राम में एक दिवसीय बैठक आयोजित की जिससे ज्ञात हुआ कि अनेक किसानों ने संस्थान के प्रोत्साहन के फलस्वरूप अपने खेतों में औषधीय पौधो की खेती प्रारम्भ की है। संस्थान ने जिला शिमला के खतनौल पंचायत के किसानों के लिए कोनीफर कैम्पस, पन्थाघाटी तथा वैर्स्टन हिमालयन टैम्परेट आरबोरेटम, पॉटर हिल, समर हिल, शिमला में एक शैक्षणिक भ्रमण आयोजित किया।

शिमला जिले के खतनौल पंचायत के प्रोत्साहित किसानों का शैक्षणिक भ्रमण

शु.व.अ.सं., जोधपुर ने दिनांक 19 से 20 सितम्बर 2013 को दाहोद, गुजरात में वर्षा जल संचयन तथा वनीकरण पर एक प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला आयोजित की जिसमें जिला वन अधिकारी, गोधरा तथा निदेशक, एन.एम. सदगुरू फॉउडेशन भी उपस्थित थे। कुल 61 प्रशिक्षुकों ने इसमे सहभागिता की जिन्हे कार्यक्षेत्रीय दौरे भी करवाए गए।

'डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर योजना' के अन्तर्गत आयोजित प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला में प्रमाण–पत्र वितरण

विदेशी बैठकों/कार्यशालाओं/संगोष्ठी में भा.वा.अ.शि.प. की सहभागिता

डॉ. एन.एस. के हर्ष, वैज्ञानिक–जी, व.अ.सं., देहरादून ने दिनांक 9 से 15 अक्टूबर 2013 को मुगला, तुर्की में कवकीय संरक्षण पर तीसरी अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में सहभागिता की।

डॉ. वी. पी. तिवारी, वैज्ञानिक–जी, का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने 5वीं जी.ए.एफ.ओ. आर.एन (जर्मनी एल्युमनी फॉरेस्ट नेटवर्क) के अन्तर्गत दक्षिण एशिया एवं उपसहारीय अफ्रीका में धारणीय वानिकी पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी" में दिनांक 8 से 12 जुलाई 2013 तक यूनिवर्सिटी ऑफ एल्डोरेट, केन्या में सहभागिता की तथा एक शोध पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. वी. के. वार्ष्णेय, वैज्ञानिक–एफ, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने दिनांक 26 से 29 अगस्त 2013 को बीजिंग (चीन) में आयोजित 7वाँ अन्तर्राष्ट्रीय औषधीय मशरूम सम्मेलन में सहभागिता की (अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक समिति के सदस्य के रूप में) तथा एक सत्र की सह अध्यक्षता भी की।

श्री वी. आर. एस. रावत, वैज्ञानिक–ई, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने कॉन्फ्रेस ऑफ पार्टीज (सी.ओ.पी.–19) के उन्नीसवे सत्र तथा जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र रूपरेखा समझौता की बैठकों के कार्यान्वयन के लिए सब्सिडियरी बॉडी फॉर साईस एंड टैक्नोलॉजीकल एडवाइस/सब्सिडियरी बॉडी फॉर इम्पलीमैंटेशन (एस.बी.एस.टी.ए./एस.बी.आई. 39) के 39वाँ सत्र में दिनांक 11 से 22 नवम्बर 2013 तक वारसा, पोलैंड में भारत सरकार के प्रतिनिधि मंडल के एक सदस्य के रूप में सहभागिता की।

डॉ. विनीत कुमार, वैज्ञानिक–ई, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने ट्रॉपिकल एण्ड सबट्रॉपिकल एग्रीकल्चरल एण्ड नैचुरल रिसोर्स मैनेजमेंट, 'द ट्रोपेनटेग' पर वार्षिक सम्मेलन में सहभागिता की तथा दिनांक 9 से 19 सितम्बर 2013 तक होहिनन्हिम/रोटनबर्ग, जर्मनी में "ट्रोपेनटेग 2013" की रूपरेखा में जर्मन एकैडमिक एक्सचेन्ज सर्विस (डी.ए.ए.डी.) एल्यूमिनी स्पेशल प्रॉजेक्ट के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ एपलाइड साईस, रोटनबर्ग में एक शोध पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. पी.पी. बोरपुजारी, अनुसन्धान अधिकारी, व.व.अ.सं., जोरहाट ने दिनांक 3 से 5 सितम्बर 2013 को यूनीवर्सिटी पुतरा, मलेशिया, सेरडांग, मलेशिया में अगर काष्ठ (आई.एस.एस.ए. 2013) पर प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी में सहभागिता की। उन्होने दिनांक 27 से 29 सितम्बर 2013 तक मिंग दाऊ यूनिवर्सिटी पीटो, चैंगहुआ, ताईवान (आर.ओ.सी.) में अगर काष्ठ पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आई.सी.ए.) में भी सहभागिता की।

कार्यशालाएं/सैमीनार/बैठकें इत्यादि

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने निम्नलिखित कार्यशालाओं का आयोजन किया :

- संभागीय स्तर पर रेगिस्तानीकरण, भू–क्षरण तथा सूखा (डी.एल.डी.डी.) के लिए सूचकों को अन्तिम रूप प्रदान करने के लिए दिनांक 30 अगस्त 2013 को हैदराबाद में आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडू तथा केरल के दक्षिण भारतीय राज्यों के लिए एक दिवसीय संभागीय परामर्शी कार्यशाला आयोजित की गई।श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) ने कार्यशाला के उद्देश्यों को बतलाते हुए कहा कि भू–निम्नीकरण तथा पारितंत्र प्रबन्धन एक वैश्विक विषय है तथा भारत के लिए एक बडी चुनौती है।मरूस्थलीकरण को रोकने के लिए भारत सरकार तथा वैश्विक पर्यावरण सुविधा (जी.ई.एफ.) मिलकर कार्य कर रहे है।इस कार्यशाला में अपने अनुभवों तथा विशेषज्ञता को डी.एल.डी.डी. से सम्बन्धित मामलो के लिए नये प्रभावी सूचकों का सुझाव देने तथा पुरानों में सुधार हेतु राज्य विभागों से लगभग 30 वरिष्ठ अधिकारियों ने सहभगिता की।

दक्षिण भारतीय राज्यों आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडू तथा केरल के लिए एक दिवसीय क्षेत्रीय परामर्शी कार्यशाला में भाग लेते उच्चाधिकारी

- स्लेम–टी.एफ.ओ., भा.वा.अ.शि.प. द्वारा स्लेम के अधीन डी.एल.डी.डी. से सम्बन्धित मामलों के लिए सूचक रूप रेखा को अन्तिम रूप प्रदान करने के लिए दिनांक 29 नवम्बर 2013 को दूसरी एक दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला कोलकाता में आयोजित की गई। इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री शैवाल दासगुप्ता, उपमहानिदेशक (विस्तार) द्वारा किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के दौरान विभिन्न स्लेम प्रकाशनों का विमोचन किया गया।

- उत्तराखण्ड राज्य के विविध विभागों के जिला स्तरीय अधिकारियों के लिए "जलागम प्रबन्ध में जैवविविधता तथा धारणीय आजीविका का संवर्धन" पर दिनांक 12 तथा 13 सितम्बर 2013 को दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला जलागम प्रबन्ध निदेशालय, देहरादून द्वारा आयोजित की गई। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में उत्तराखण्ड के विविध विभागों के 20 जिला स्तरीय अधिकारियों ने सहभागिता की।

"जलागम प्रबन्ध में जैवविविधता तथा धारणीय आजीविका का संवर्धन" पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला में उच्चाधिकारी

व.अ.सं., देहरादून ने निम्नलिखित कार्यशालाओं का आयोजन किया :

- अधिकारियों को नये विचारों से परिचित करवाने, वानिकी के उपायों तथा तकनीकों तथा अन्तर्राष्ट्रीय अनुभवों को प्राप्त करवाने हेतु वर्ष 2014 में तीसरे फेज में 7–9 वर्ष की सेवाओं के साथ भारतीय वन सेवा अधिकारियों के मध्य कैरियर प्रशिक्षण को वन अनुसन्धान संस्थान/भा.वा.अ.शि.प. संघ प्रारम्भ कर रहा है। वन अनुसन्धान संस्थान/भा.वा.अ.शि.प. जो संघ के अग्रणी है, के अतिरिक्त मध्य कैरियर प्रशिक्षण के साझेदारों में भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून; भारतीय वन सर्वेक्षण, देहरादून; भारतीय प्रबन्धन संस्थान, लखनऊ तथा स्वीडिश कंसोर्शियम तथा कोलोराडो स्टेट यूनीवर्सिटी सम्मिलित है।

  मध्य कैरियर प्रशिक्षण की उपयोगिता को बढ़ाने के लिए दो दिवसीय प्रारम्भिक कार्यशाला दिनांक 25 तथा 26 नवम्बर 2013 को वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में आयोजित की गई। कार्यशाला की अध्यक्षता श्री आर.के.गोयल, निदेशक, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून द्वारा की गई। इस कार्यशाला में हुए विचार–विमर्श के आधार पर मध्य कैरियर प्रशिक्षण फेज – III के पाठ्यक्रम को अन्तिम रूप प्रदान किया गया।

भा.व.से. अधिकारियों के मध्य कैरियर प्रशिक्षण फेज–III पर कार्यशाला के सहभागी

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने दिनांक 28 तथा 29 नवम्बर 2013 को वृक्ष बीज विज्ञान तथा वन संवर्धन पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की। इस अवसर पर डॉ. एन. कृष्णकुमार, निदेशक, व.आ.वृ.प्र.सं. ने अपने अध्यक्षीय भाषण में उच्च गुणवत्ता के बीजों की आवश्यकता पर बल दिया ।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने दिनांक 23 तथा 24 सितम्बर 2013 को "ट्री बायोटैक्नोलॉजी 2013–वानिकी तथा वृक्ष विज्ञान में उभरती हुई चुनौतियां" पर एक राष्ट्रीय सैमीनार आयोजित किया। सैमीनार का उद्घाटन डॉ. पी. बालाकृष्ण पिसुपति, अध्यक्ष, राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण द्वारा किया गया।

"ट्री बायोटैक्नोलॉजी 2013–वानिकी तथा वृक्ष विज्ञान में उभरती हुई चुनौतियां" पर राष्ट्रीय सैमीनार

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने कर्नाटक राज्य जैव ईंधन विकास बोर्ड (के.एस.बी.डी.बी.) तथा कर्नाटक राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् (के.एस.सी.एस.टी.) के सहयोग से दिनांक 22 तथा 23 नवम्बर 2013 को "जैव ईंधनों में हाल में हुई प्रगति" पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन श्री ए.के. मोनाप्पा, भा.प्र.से., प्रबन्ध निदेशक, के.एस.बी.डी.बी. द्वारा किया गया।

हि.व.अ.सं., शिमला ने दिनांक 3 तथा 4 अक्टूबर 2013 को "हिमालय क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन अनुकूलन" पर एक कार्यशाला–सह–प्रशिक्षण आयोजित किया जिसमें विभिन्न पर्यावरण सम्बन्धित संस्थाओं से 48 सहभागियों ने सहभागिता की। इस कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. आर. के. गुप्ता, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, हिमाचल प्रदेश द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) ने स्लेम परियोजना के विषय में बोलते हुए भू उपयोग के लिए उपयुक्त नीति के विकास में इस परियोजना के अंतर्क्षेत्रीय उपागमों और सर्वोत्तम पद्धतियों की पुनरावृत्ति हेतु उनके अभिसरण के महत्व पर प्रकाश डाला।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये :

- सरकारी क्षेत्र में कार्य कर रहे वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगविदों के लिए दिनांक 21 से 25 अक्टूबर 2013 तक "जलवायु परिवर्तन तथा कार्बन शमन" पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रायोजित एक साप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभिन्न अनुसन्धान संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों से 27 वैज्ञानिको ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
- भारत सरकार के वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगविदों के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित "वन पारितंत्र जैवविविधता तथा जलवायु परिवर्तन : संवेदनशीलताए तथा अनुकूलन रणनीतियां" पर एक साप्ताहिक प्रशिक्षण

"वन पारितंत्र, जैवविविधता तथा जलवायु परिवर्तन : संवेदनशीलताएं तथा अनुकूलन रणनीतियां" पर भारत सरकार के वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगविदों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम के सहभागी

कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमे भारत के 14 राज्यों तथा विभिन्न वैज्ञानिक संस्थाओं से सम्बन्धित 23 सहभागियों ने सहभागिता की।

व.अ.सं., देहरादून ने निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये :

- "अकाष्ठ वन उपज एवं कृषि वानिकी उत्पादों को बाजार से सम्बन्धित रखने के विषय पर – बाधाएं, अवसर और चुनौतियां" पर दिनांक 22 से 24 जुलाई 2013 तक राष्ट्रीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमे देश के वन तथा जल संभरण प्रभागों से 19 सहभागियों ने सहभागिता की। यह प्रशिक्षण नेशनल रेन फेड एरिया अथोरिटी, योजना आयोग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित था। संस्थान ने दिनांक 7 जुलाई 2013 को देवलसारी, टिहरी गढ़वाल तथा दिनांक 28 अक्टूबर 2013 को मगरा, टिहरी गढ़वाल के ग्रामीणों, रिंगाल उत्पादकों, ग्राम पंचायतों तथा उत्तराखण्ड वन विभाग के स्थल कर्मियों तथा कलाकारों के लिए रिंगाल प्रवर्धन तथा संरक्षण तकनीकों पर दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जिसमे क्रमशः 80 तथा 70 सहभागियों ने सहभागिता की।
- बिहार के किसानों के लिए "हरियाली मिशन" के अधीन बिहार वन विभागों द्वारा "कृषि वानिकी तथा भू–प्रबन्धन" पर दिनांक 2 से 6 सितम्बर 2013, 16 से 20 सितम्बर 2013, 18 से 22 नवम्बर 2013 तथा 9 से 13 दिसम्बर 2013 को चार पांच दिवसीय लघु अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। इनमें 122 सहभागियों ने सहभागिता की।

व.अ.सं., देहरादून में "कृषि वानिकी तथा भू–प्रबन्धन" पर प्रशिक्षण के सहभागी

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये :

- "बायो प्रोस्पैक्टिंग–राज्य वन विभागों की भूमिका" पर भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए दिनांक 1 तथा 2 अगस्त 2013 को पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की। इस प्रशिक्षण कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. एन. कृष्णकुमार, भा.व.से., निदेशक, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने की। उन्होने बतलाया कि व.आ. वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर को एफ.जी.आर. मैनेजमैंट नेटवर्क विकसित करने के लिए नोडल एजेन्सी के रूप में अभिज्ञात किया गया है।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने दिनांक 16 से 20 सितम्बर 2013 तक भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए "वन आनुवंशिक संसाधन प्रबन्धन" पर पांच दिवसीय पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जो कि पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित था। इसमें कुल 29 भा.व.से. अधिकारियों ने भाग लिया। इसकी अध्यक्षता डॉ. एन. कृष्णकुमार, निदेशक, व.आ.वृ.प्र.सं. ने की।
- उदगमंडलम्, नीलगिरि जिला, तमिलनाडु में पहाडी क्षेत्र विकास कार्यक्रम (एच.ए.डी.पी.), तमिलनाडु सरकार द्वारा निधियीत "जैव उवर्रक उत्पादन और पौधशाला तथा कार्यक्षेत्रों में उनका अनुप्रयोग" पर 22 अगस्त 2013 तथा 22 नवम्बर 2013 को दो प्रशिक्षण–सह–प्रदर्शन आयोजित किये गये। इसमे लगभग 178 सहभागियों ने सहभागिता की।

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने विकास कमीशनर (हस्तशिल्प), कपडा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली की एच.आर.डी. योजना के अधीन दिनांक 26 से 30 अगस्त 2013 तथा 21 से 25 अक्टूबर 2013 तक शिल्पकारों को क्षमता निर्माण पर प्रशिक्षण दिया। इसमे लगभग 40 सहभगियों ने सहभागिता की। संस्थान ने 23 अक्टूबर 2013 को मैसूर जिला कर्नाटक के हुनसुर तालुका में तथा उसके आसपास के किसानों के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया। यह केन्द्रीय तम्बाकू अनुसन्धान संस्थान, हुनसुर तथा कर्नाटक, वन विभाग का संयुक्त प्रयास था। इसमे भी मैसूर जिले के 40 किसानों ने सहभागिता की।

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर द्वारा दिनांक 9 से 10 अक्टूबर 2013 तक "पादप रसायन विश्लेषण के लिए यंत्रीकरण तकनीक" पर प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में लगभग 20 विद्यार्थियों ने सहभागिता की। संस्थान ने कर्नाटक वन विभाग के रेंज वन अधिकारियों के लिए दिनांक 2 से 6 दिसम्बर 2013 को "महत्वपूर्ण प्रकाष्ठ की कार्यस्थलीय पहचान" पर प्रशिक्षण आयोजित किया जिसमे विभिन्न वन विभागों से 25 रेज वन अधिकारियों ने सहभागिता की। इसके अतिरिक्त दिनांक 27 दिसम्बर 2013 को चन्दन की कृषि से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर कर्नाटक वन विभाग के कानून, नीति तथा योजनाओं पर किसानों को प्रशिक्षण दिया गया जिसमे 65 किसानो/महिला स्वयं सहायता समूह, कर्नाटक वन विभाग के कर्मचारियों ने सहभागिता की।

व.उ.सं., रांची ने दिनांक 4 से 6 दिसम्बर 2013 तक वानिकी सैक्टर में क्षमता निर्माण के लिए पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित "बंजर भूमि का पुनरुद्धार" पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमे विभिन्न सरकारी कर्मचारियों, गैर सरकारी संगठनों के सदस्यों तथा प्रगतिशील किसानों ने सहभागिता की।

"बंजर भूमि का पुनरुद्धार" प्रशिक्षण के सहभागी

व.जै.सं., हैदराबाद ने मेडक जिले के रामायणापेट में दिनांक 27 तथा 28 दिसम्बर 2013 को आन्ध्र प्रदेश के अर्ध शुष्क कटिबंध में वृक्ष प्रजातियों के रूप में *राइटिया टिंक्टोरिया* तथा *मेलाईना आर्बोरिया* में कृषि वानिकी के विकास के लिए किसानों के लिए प्रदर्शन–सह–प्रशिक्षण आयोजित किया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर ने दिनांक 8 से 10 जुलाई 2013 तक पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित "अन्य पणधारियों हेतु औषधीय पादपों की खेती" पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 36 प्रशिक्षुओं ने सहभागिता की।

शु.व.अ.सं, जोधपुर द्वारा दिनांक 16 से 20 दिसम्बर 2013 तक भा.व.से. अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता अभिजीत घोष, भा.व.से. प्र.मु.व.सं., राजस्थान ने की। श्री अभिजीत घोष ने उद्घाटन सत्र में बोलते हुए कहा कि मरूस्थल धारणीय विकास तथा संसाधन को ईष्टतम रूप से उपयोग करने का एक सर्वेत्तम क्षेत्र है। उन्होने अपील की कि उत्पादकता को बढ़ाने तथा वर्षा जल संचयन के लिए दीर्घावधि कार्यक्रम बनाये जाए।

बांस तकनीकी सहायता समूह (बी.टी.एस.जी.) भा.वा.अ.शि.प. प्रशिक्षण

भा.वा.अ.शि.प. – बांस तकनीकी सहायता समूह (बी.टी.एस.जी.) की छत्रछाया में डिजाइनो को बनाने में कौशल उन्नयन तथा बांस किसानों तथा कलाकारों के क्षमता निर्माण के लिए पांच दिवसीय तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए :

- **उ.व.अ.सं., जबलपुर** ने दिनांक 23 से 27 सितम्बर 2013 को मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के किसानों तथा शिल्पकारों के लिए बांस हस्तशिल्प पर एक विशेषीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।
- **व.अ.सं, रांची** ने दिनांक 18 से 22 नवम्बर 2013 तक 26 किसानों/शिल्पकारों के लिए "बांस हस्तशिल्प" पर पांच दिवसीय विशेषीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये।

व.उ.सं., रांची में बांस हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण

- **शु.व.अ.सं., जोधपुर** द्वारा 9 से 13 दिसम्बर 2013 तक बांस पर एक पांच दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र में बोलते हुए श्री कुलविन्दर सिंह, सहायक निदेशक (हस्त शिल्प), भारत सरकार ने बाँस उत्पादों के नवीन डिजाइन, विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया जिससे छोटे किसानों को लाभ हो सके।

अनुसन्धान खोजें

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा विकसित हाई–एक्ट, ट्री–पाल (एच) तथा समृद्ध वृक्ष बायो बूस्टर पैलेटस को मूल्यांकित किया गया तथा वानिकी प्रजातियों तथा व्यापारिक फसलों के कीटों तथा रोगों के विरूद्ध उनकी क्षमता को जांचा गया।

व.अ.सं., देहरादून ने भारत के 275 वर्षा जल भराव वाले जिलों में वन सीमांत ग्रामों को अभिज्ञात करने के लिए जी.आई.एस. आधारित खोजें की। ये जिले 26 राज्यों तथा एक केन्द्र शासित राज्य में फैले हुए है।

वन विज्ञान केन्द्र तथा प्रदर्शन ग्राम

हि.व.अ.सं., शिमला ने 8 जुलाई 2013 को व.वि.के. (जम्मू तथा कश्मीर) के अन्तर्गत लेह लद्दाख में "वन उत्पादकता को बढ़ाने के लिए तकनीकी और अनुसन्धान हस्तक्षेप का प्रयोग" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

व.व.अ.सं., जोरहाट ने प्रदर्शन ग्राम, वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट के 18 प्रशिक्षुओं के लिए दिनांक 22 से 26 जुलाई 2013 तक बांस हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण आयोजित किया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर ने दिनांक 3 से 5 अक्टूबर 2013 तक दादर तथा नगर हवेली में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें कुल 42 प्रशिक्षुओं ने सहभागिता की।

व.वि.के. तथा कृ.वि.के. की नेटवर्किंग

व.अ.सं., देहरादून ने कृषि विज्ञान केन्द्र, यमुना नगर के सहयोग से दिनांक 30 अगस्त 2013, दिनांक 05 सितम्बर 2013 तथा दिनांक 1 अक्टूबर 2013 को क्रमशः "पॉपलर आधारित कृषि वानिकी" , "गैनोडर्मा ल्यूसीडम एवं मशरूम की खेती" तथा "कृषि वानिकी प्रजातियों में बीमारी एवं कीटों का प्रकोप एवं रोकथाम" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये जिन में लगभग 150 किसानों ने सहभागिता की। इसके अतिरिक्त दिनांक 18 सितम्बर 2013 को कृषि विज्ञान केन्द्र, पटियाला के सहयोग से आयोजित क्षेत्रीय किसान मेले में "कृषि वानिकी द्वारा आमदनी में बढ़ोत्तरी" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, पटियाला में प्रदर्शनी

हि.व.अ.सं., शिमला ने "कृषि विज्ञान केन्द्र के साथ वन विज्ञान केन्द्रों की नेटवर्किंग" पर एक दिवसीय बैठक दिनांक 30 अगस्त 2013 को आयोजित की। बैठक में 30 सहभागियों ने सहभागिता की।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा वन विज्ञान केन्द्र (वी.वी.के.) के अन्तर्गत दिनांक 25 तथा 26 नवम्बर 2013 को "महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण और उपयोग" पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषि विज्ञान केन्द्र, सारू चम्बा के साथ सहयोग करते हुए आयोजित किया गया तथा इसमे 40 प्रगतिशील किसानों ने सहभागिता की।

प्रकाशन

इस अवधि के दौरान स्लेम–टी.एफ.ओ. ने निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किये :

- **फ्लायर**
  - "मैनेजिंग ग्रांउड वाटर एडेप्टेशन टू क्लाइमेट चेंज इन सदर्न इंडिया"
  - "लैंड शेपिंग फॉर क्लाइमेट चेंज एडेप्टेशन एण्ड सस्टेनेबल लाईवलीहुड इन सुन्दरवन"
  - "इंटीग्रेटिड फार्म डेवलपमेंट फॉर सस्टेनेबल लैंड प्रोडक्टविटी इन नागालैण्ड"
  - "आंवला बेस्ड एग्रो फॉरेस्ट्री ऐज सस्टेनेबल लैंड एण्ड इको सिस्टम मैनेजमेंट प्रैक्टिस इन सैमी एरिड ड्राई रीजन"
  - "लैक कल्टीवेशन फॉर लाइवलीहुड जेनरेशन एण्ड बायोडायवर्सिटी कंजरवेशन इन मध्यप्रदेश"
- "डिस्सैमीनेशन ऑफ सस्टेनेबल लैंड एण्ड इकोसिस्टम मैनेजमेंट प्रैक्टिसिस एण्ड ट्रेडिशनल नॉलेज थ्रू कम्यूनिटी रेडियो स्टेशन इन आन्ध्र प्रदेश"
- स्लेम न्यूजलैटर, जून 2013, वाल्यूम 5 नं. 1
- एनुअल रिपोर्ट अप्रैल 2012 से मार्च 2013

परामर्शी

बेल्लारी, चित्रदुर्ग तथा तुमकुर जिलों में खनन प्रभावित क्षेत्रों के पुनरूद्धार एवं पुनर्स्थापन (आर.एण्ड आर.) हेतु योजना

कर्नाटक सरकार ने भा.वा.अ.शि.प. को बेल्लारी, चित्रदुर्ग तथा तुमकुर जिलों में 166 खदानों के लिए "पुनरूद्धार एवं पुनर्स्थापन (आर.एण्ड आर.) योजना" की तैयारी के लिए परामर्शी सेवाए देने का कार्य सौंपा है। वर्ग ए तथा बी की 80 खदानों के लिए आर.एण्ड आर. योजनाएं तैयार की जा चुकी है तथा कर्नाटक सरकार के द्वारा भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायलय को प्रस्तुत की गई है। इनमें से 73 आर. एण्ड आर. योजनाएं माननीय सर्वोच्च न्यायलय की सी.ई.सी. द्वारा अनुमोदित की जा चुकी है।

हिमाचल प्रदेश में सतलुज नदी बेसिन के लिए वृहद पर्यावरण प्रभाव आकलन

उर्जा निदेशालय, हिमाचल प्रदेश सरकार ने भा.वा.अ.शि.प. को मुख्य परामर्शी के रूप में सतलुज नदी घाटी, हिमाचल प्रदेश में जल विद्युत परियोजनाओं के पर्यावरण प्रभाव आकलन का कार्य सौंपा है। इस कार्य में कई अन्य संस्थाए जैसे अल्टरनेट हाईड्रो एनर्जी सेन्टर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रूडकी; डायरेक्टरेट ऑफ कोल्ड वाटर फिशरिस रिसर्च, भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्, भीमताल तथा सलीम अली सेन्टर फॉर ऑरनिथोलॉजी एण्ड नेचुरल हिस्ट्री भी भा.वा.अ.शि.प. के साथ सम्मिलित है।

रामपुर जल विद्युत परियोजना स्थल से सतलुज घाटी का दृश्य

उत्तराखण्ड में यमुना तथा टौंस नदी पर वृहद पर्यावरण प्रभाव आकलन

उत्तराखण्ड में यमुना, टौंस तथा उसकी सहयोगी नदियों की जल विद्युत परियोजनाओं के वृहद पर्यावरणीय प्रभाव आकलन के परामर्शी का कार्य उत्तराखण्ड जल विद्युत निगम, उत्तराखण्ड सरकार द्वारा मुख्य परामर्शी के रूप में भा.वा.अ.शि.प. को दिया गया है। भा.वा.अ.शि.प. के साथ अल्टरनेट हाइड्रो एनर्जी सेन्टर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रूडकी; डायरेक्टरेट ऑफ कोल्ड वाटर फिशरिस रिसर्च, भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्, भीमताल तथा सलीम अली सेन्टर फॉर ऑरनिथोलॉजी एण्ड नेचुरल हिस्ट्री, जैसी अन्य कई संस्थाए भी इसमे सम्मिलित है।

विशिष्ट अतिथियों का दौरा

श्री वी. राजगोपालन, भा.प्र.से., सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार ने दिनांक 29 जुलाई 2013 को का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर का दौरा किया।

महामहिम श्री डैनियल मैंचीनी, माननीय राजदूत, इटली ने 6 सितम्बर 2013 को का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर के उन्नत काष्ठ कार्य प्रशिक्षण केन्द्र का दौरा किया। उनके साथ कुछ अन्य अतिथि भी थे। संस्थान की ए.डब्ल्यू.टी.सी. की इटैलियन ट्रेड कमीशन के साथ एक सहायोगात्मक परियोजना है।

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने अनुसन्धान क्रियाकलापों तथा संस्थान से सम्बन्धित अन्य कार्यों की समीक्षा के लिए दिनांक 14 नवम्बर 2013 को का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर, दिनांक 24 नवम्बर 2013 तथा दिनांक 14 तथा 15 दिसम्बर 2013 को व.जै.सं., हैदराबाद तथा दिनांक 19 तथा 20 सितम्बर 2013 को हि.व.अ.सं., शिमला का दौरा किया।

डॉ. डी.के. शर्मा, उप महानिरीक्षक, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ने दिनांक 19 सितम्बर 2013 को वन उत्पादकता संस्थान, रांची का भ्रमण किया।

पणधारियों की बैठक

अगले वित्त वर्ष की नई परियोजनाओं पर विचार विमर्श करने के लिए 17 सितम्बर 2013 को पणधारियों की बैठक का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर में आयोजित की गई।

शु.व.अ.सं., जोधपुर ने दिनांक 19 सितम्बर 2013 को गांधीनगर, गुजरात में पणधारियों की बैठक आयोजित की। इस बैठक के दौरान जारी परियोजनाओं पर विचार विमर्श करने के अतिरिक्त आफरी की सात नई परियोजनाएं प्रस्तुत की गई। संस्थान ने दिनांक 4 अक्टूबर 2013 को संस्थान में पणधारियों की एक और बैठक आयोजित की।

अनुसन्धान सलाहकार समूह बैठकें

संस्थान के निदेशकों की अध्यक्षता में संस्थानों की अनुसन्धान सलाहकार समूह (आर.ए.जी.) की बैठकें आयोजित की गई। अनुसन्धान प्रस्तावों की अनुशंसाओं को 15वीं अनुसन्धान नीति समिति (आर.पी.सी.) के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

अनुसन्धान तथा विस्तार के साथ वानिकी शिक्षा नेटवर्किंग

भा.वा.अ.शि.प. ने "अकाष्ठ वन उपज पर नेटवर्किंग परियोजना" के अन्तर्गत विभिन्न विश्वविद्यालयों से प्राप्त स्थिति प्रतिवेदन तथा विस्तृत परियोजना प्रतिवेदनों (डी.पी.आर.) को मूल्यांकित किया। कुल रू 86,558.00 का सहायक अनुदान दो विश्व विद्यालयों शेर–ए–कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, श्रीनगर, जम्मू कश्मीर तथा ए.एस.पी.ई.ई बागवानी तथा वानिकी कॉलेज, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी, गुजरात को दिया गया।

औपचारिक वानिकी शिक्षा में सुधार

शिक्षा निदेशालय देश में वानिकी शिक्षा दे रहे विश्वविद्यालयों को अवसंरचना विकास जैसे वैज्ञानिक उपकरणों का क्रय, पुस्तकों, विद्यार्थियों के लिए खेल का सामान, संग्रहालयों की संरचना बनाने, विद्यार्थियों की यात्रा का सामान, विद्यार्थियों की यात्रा के लिए यातायात के साधनों की खरीद, कम्प्यूटर, सैमीनार के आयोजन, शिक्षकों की राष्ट्रीय सैमीनारों में सहभागिता तथा विद्यार्थियों के शैक्षिक दौरों के लिए अनुदान देती है। इस अवधि के दौरान विभिन्न विश्वविद्यालयों ने 19 प्रस्ताव प्रस्तुत किये तथा उन्हें वर्ष 2013–14 के लिए सहायक अनुदान हेतु संस्वीकृत करने के लिए जांचा गया।

विश्वविद्यालयों का प्रत्यायन

प्रत्यायन के लिए तीन विश्वविद्यालयों जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर; वन अनुसन्धान संस्थान सम विश्वविद्यालय, देहरादून तथा गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर से प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं तथा उन विश्वविद्यालयों में चलाए जा रहे वानिकी पाठ्यक्रमों पर विचार विमर्श किया जा रहा है।

राजभाषा समाचार

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा दिनांक 16 से 23 सितम्बर 2013 तक हिन्दी सप्ताह समारोह आयोजित किया गया। सप्ताह के दौरान पांच प्रतिस्पर्धाएं नामतः निबन्ध लेखन, टिप्पणी लेखन, अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद, हिन्दी टंकण

तथा स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई। समापन समारोह भा.वा.अ.शि.प. सभागार में आयोजित किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए श्री शैवाल दासगुप्ता ने राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला तथा कहा कि सरकारी काम काज में हिन्दी के प्रयोग के लिए भा.वा.अ.शि.प. पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है तथा परिषद् द्वारा राजभाषा अधिनियम 1963 के नियमों तथा आदेशों के अनुपालन में समय–समय पर विभिन्न प्रशिक्षण तथा कार्यशालाएं आयोजित करवाई जाती हैं जिनका दैनिक सरकारी कार्यों में हिन्दी के प्रयोग में अभिवृद्धि में बहुत योगदान है। उन्होने राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि के लिए गम्भीर प्रयास करने का आवाहन किया। समारोह में हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिये गये।

भा.वा.अ.शि.प. देहरादून में हिन्दी सप्ताह समारोह 2013 के अवसर पर उप महानिदेशक (विस्तार) तथा अन्य उच्चाधिकारी दीप प्रज्ज्वलित करते हुए

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने दिनांक 27 सितम्बर 2013 को हिन्दी दिवस मनाया इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. डी.वी. मनीवाल राजू, आई.आर.एस. द्वारा की गई।

व.उ.सं., रांची ने दिनांक 1 से 14 सितम्बर 2013 तक हिन्दी पखवाडे का आयोजन किया। हिन्दी पखवाडे के दौरान दिनांक 13 सितम्बर 2013 को सभी कर्मचारियों के लिए राजभाषा पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर ने दिनांक 13 से 27 सितम्बर 2013 तक हिन्दी पखवाडा मनाया। इस पखवाडे के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे प्रश्न मंच, अनुवाद, निबन्ध, सामान्य प्रशासनिक ज्ञान, हिन्दी टंकण तथा कामकाजी हिन्दी ज्ञान इत्यादि आयोजित किए गए। पखवाडें के दौरान एक वैज्ञानिक सैमीनार–सह–हिन्दी कार्यशाला भी आयोजित की गई। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. नन्दलाल काला ने अपने सम्बोधन में कहा कि हिन्दी 153 देशों के विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है तथा हिन्दी भाषा में सात लाख से अधिक शब्द है।

व.व.अ.सं., जोरहाट ने दिनांक 9 से 16 सितम्बर 2013 की अवधि के दौरान हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन किया। संस्थान ने दिनांक 11 सितम्बर 2013 को एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का विषय राजभाषा हिन्दी था। इस कार्यशाला के मुख्य वक्ता श्री अजय कुमार, हिन्दी अधिकारी, नॉर्थ ईस्ट इन्सीटयूट ऑफ साईस एण्ड टैक्नोलॉजी, जोरहाट थे। श्री कुमार ने राष्ट्र–भाषा हिन्दी तथा राजभाषा हिन्दी के मध्य अन्तर पर एक भाषण दिया। उन्होने राजभाषा हिन्दी के उपयोग के संवैधानिक उत्तरदायित्व के विषय पर भी विचार व्यक्त किये।

वार्षिक पुनरीक्षण

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून नियमित रूप से अनुसन्धान परियोजनाओं की प्रगति का अनुश्रवण एवं मूल्यांकन करता है। इस अवधि के दौरान 189 जारी तथा पूर्ण अनुसन्धान परियोजनाओं (139 भा.वा.अ.शि.प. निधियीत तथा 50 बाहय सहायता प्राप्त) की समीक्षा की गई तथा परियोजनाओं के उददेश्यों को समय से प्राप्त करने के लिए भौतिक तथा आर्थिक प्राप्तियों के लिए सुधारात्मक उपाय सुझाए गए।

जैवविविधता पर अन्तर्राष्ट्रीय दिवस

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने जैवविविधता 2013 पर अन्तर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर "जल तथा जैवविविधता" पर विभिन्न क्षेत्रीय संस्थानों से निवेश उपलब्ध करवा कर एक प्रतिवेदन तैयार किया तथा उसे पर्यावरण एवं वन मंत्रालय को प्रस्तुत किया।

वन महोत्सव

व.अ.सं., देहरादून ने दिनांक 29 जुलाई 2013 को वन महोत्सव मनाया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. पी.पी. भोजवेद, निदेशक, व.अ.सं. थे।

व.अ.सं., देहरादून में वन महोत्सव के अवसर पर वृक्षारोपण करते हुए संस्थान के निदेशक, डॉ. पी. पी. भोजवेद

हि.व.अ.सं., शिमला ने दिनांक 20 जुलाई 2013 को वन महोत्सव मनाया। इस अवसर पर गर्वमैंट सीनियर सैकेंडरी स्कूल, मसोबरा के 40 विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों ने रोपण कार्यक्रम में सक्रिय रूप से सहभागिता की।

शु.व.अ.सं., जोधपुर ने दिनांक 30 जुलाई 2013 को 64[वां] वन महोत्सव मनाया तथा दिनांक 18 अगस्त 2013 को राज्य वन महोत्सव कार्यक्रम में भी सहभागिता की जिसमें शोध उपलब्धियों कार्यों से संबंधित एक स्टॉल भी मेला मण्डप में लगाया गया। इस कार्यक्रम में राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री, पर्यावरण मंत्री, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, सहित अनेक वनाधिकारियों एवं सामान्य जन ने आफरी के स्टॉल का भ्रमण किया तथा मुख्यमंत्री सहित सभी ने आफरी की गतिविधियों को सराहा।

हिमालयन दिवस

व.अ.सं., देहरादून तथा **हि.व.अ.सं., शिमला** द्वारा दिनांक 9 सितम्बर 2013 को हिमालयन दिवस मनाया गया। इस अवसर पर हिमालय से सम्बन्धित पर्यावरणीय समस्याओं पर विचार विमर्श किया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

सतर्कता जागरूकता सप्ताह दिनांक 28 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2013 तक भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों, केन्द्रों तथा परिषद् (मुख्यालय) में मनाया गया। इसके अन्तर्गत सभी कर्मचारियों को शपथ दिलाई गई तथा विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

वन्य जीव सप्ताह

वन अनुसन्धान संस्थान (सम) विश्वविद्यालय ने दिनांक 3 से 5 अक्टूबर 2013 तक वन्य जीव सप्ताह मनाया। इस अवधि के दौरान वन्य जीव फोटोग्राफी, पोस्टर प्रस्तुतिकरण, वाद विवाद स्पर्धा, लैक्चर तथा फिल्म शो इत्यादि आयोजित किये गये।

विश्व बांस दिवस

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने दिनांक 18 सितम्बर 2013 को विश्व बांस दिवस आयोजित किया। इस अवसर पर बांस की तीन प्रजातियों पर प्रचार पुस्तकों का विमोचन किया गया।

नेशनल वर्किंग प्लान कोड–2004 का संशोधन

क्षेत्रीय कार्यशाला कोलकाता (मई 2012), बैंगलोर (जून 2012) तथा देहरादून (जून 2012) तथा एन.डब्ल्यू.पी.सी. पर राष्ट्रीय कार्यशाला, नई दिल्ली (मई 2013) जिनमे जलवायु, रेड प्लस, वन तथा जैवविविधता का धारणीय प्रबन्धन इत्यादि से सम्बन्धित पहलू सम्मिलित थे, के सहभागियों से प्राप्त सुझावों को सम्मिलित कर वन अनुसन्धान संस्थान द्वारा वन तथा जैवविविधता के धारणीय प्रबन्धन के लिए प्रारूप नेशनल वर्किंग प्लान कोड पूरा किया गया। राष्ट्रीय दल जिसमे श्री ए.के. मुकर्जी, भा.व.से., श्री एम.पी. सिंह, भा.व.से. तथा श्री एस.आर रेड्डी, उ.व.सं. शामिल थे, ने नेशलन वर्किंग प्लान कोड के संशोधन के लिए 5 दिसम्बर 2013 को महानिदेशक (वन) तथा विशेष सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली को नेशनल वर्किंग प्लान कोड– 2014 का अंतिम प्रारूप प्रस्तुत किया।

नवीन प्रयास

व.आ.व.प्र.सं., कोयम्बटूर में क्लोनल प्रौद्योगिकी के द्वारा सागौन की गुणवत्ता रोपण सामग्री के उत्पादन के लिए सागौन वानस्पतिक बहुलीकरण बागान (वी.एम.जी.) तथा धुन्ध कक्ष के साथ–साथ शेड हाउस, सुदृढ़ीकरण कक्ष तथा कार्यालय भवन का उद्‌घाटन श्री डी. के. वर्मा, भा.व.से., अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक, उत्तरी क्षेत्र कलकत्ता द्वारा डॉ. एन. कृष्णकुमार, निदेशक, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर तथा अन्य उच्चाधिकारियों की उपस्थिति में दिनांक 19 जुलाई 2013 को वालायार, केरल में किया गया। इन सुविधाओं के द्वारा भा.वा.अ.शि.प. की 'डॉयरेक्ट टू कन्ज्यूमर' योजना के अन्तर्गत संस्थान किसानों को उत्कृष्ट रोपण सामग्री उपलब्ध करवाएगा। संस्थान के निदेशक डॉ. एन. कृष्णकुमार, ने उत्कृष्ट जर्म प्लाज्म से क्लोनल उत्पादन को बढ़ाने के लिए नई अवसंरचना सुविधाएं जैसे मूल क्यारियों, नवीकृत धुन्ध कक्ष, आर.ओ.

व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में आर.ओ. जल उपचार संयंत्र का प्रदर्शन

जल उपचार संयंत्र इत्यादि का उद्‌घाटन किया। संस्थान द्वारा नेवली में एक नया अनुसन्धान केन्द्र स्थापित किया गया है। केन्द्र का उद्‌घाटन दिनांक 13 दिसम्बर 2013 को संस्थान के निदेशक डॉ. एन. कृष्णकुमार द्वारा किया गया। इस केन्द्र में 25 हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करते हुए विभिन्न प्रजातियों जैसे *कैजोरीना, मेलाईना आर्बोरिया, मीलिया डूबिया, सागौन, अकेशिया आरिकुलीफॉर्मिस, कैलोफाईलम इनोफाइलम, एलेन्थस, न्यूलेमार्किया कदम्बा* आदि के जर्म प्लाज्म को संरक्षित किया जाएगा। रोपण गतिविधियों को शुरू कर दिया गया है।

व.उ.सं., रांची ने दिनांक 27 सितम्बर 2013 को दुर्लभ एवं लुप्त प्राय वनस्पतियों के स्थाने संरक्षण के लिए आधार भूत सुविधाओं के विकास के लिए झारखण्ड में पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित परियोजना के अन्तर्गत झारखण्ड के लिए लीड गार्डन के व्याख्यान केन्द्र की स्थापना की। केन्द्र का उद्‌घाटन श्री रामेश्वर दास, संस्थान के पूर्व निदेशक के द्वारा किया गया। संस्थान द्वारा दिनांक 3 अक्टूबर 2013 को प्रशिक्षण, शिक्षा तथा विस्तार केन्द्र का उद्‌घाटन भी किया गया।

व.उ.सं., रांची में व्याख्यान केन्द्र का उद्‌घाटन

पेंटेंट

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून को "An Eco-friendly, Economical and Non-hazardous Wood Preservative" पर एक पेंटेंट (Patent application No. 264/DEL/2008 & Patent No. 257393 Dated 30 January 2008) दिनांक 26 अक्टूबर 2013 को प्राप्त हुआ।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

व.अ.सं., देहरादून द्वारा दिनांक 06 दिसम्बर 2013 को वनस्पतीय पदार्थों से कम्पोस्ट का उत्पादन करने की प्रौद्योगिकी सर्वश्री आनंद आर्गेनिक कृषि उद्योग, आनंद प्लेस–2, प्रथम तल, मेन रोड़ नंदन वन, नागपुर, महाराष्ट्र को रू. 1,20,000 लाख की लाइसेंस फीस लेकर हस्तांतरित की गई।

डॉ. एस. एस. गर्ब्याल, भा.वा.अ.शि.प. के नये महानिदेशक

डॉ. एस. एस. गर्ब्याल, भा.व.से. (ए.जी.एम.यू.टी.: 1977), महानिदेशक वन तथा विशेष सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली ने दिनांक 16 जनवरी 2014 के पूर्वाह्न में महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. के पद का अतिरिक्त कार्यभार ग्रहण किया।

- "वानिकी समाचार" में प्रकाशित सामग्री सम्पादक मण्डल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
- प्रकाशन हेतु सामग्री मानद सम्पादक को प्रेषित की जा सकती है।
- डिजिटल संस्करण **www.icfre.gov.in** पर उपलब्ध है।

संरक्षक :
डॉ. एस. एस. गर्ब्याल, महानिदेशक

सम्पादक मण्डल :
श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), **अध्यक्ष**
श्री विवेक खाण्डेकर, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), **मानद सम्पादक**
श्री रमाकान्त मिश्र, अनुसन्धान अधिकारी (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), **सदस्य**

प्रेषक :
श्री विवेक खाण्डेकर
सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार)
विस्तार निदेशालय, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
ई–मेल : adg_mp@icfre.org
दूरभाष : 0135–2755221, फैक्स : 0135–2750693